The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 3 | March 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सुशीला टाकभौरे की दलित साहित्य के प्रति आत्मभिव्यक्ति

रीना गिरी
शोधार्थी, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भिलाई
Email- *rinagiri1806@gmail.com*

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-03-2025

Published: 15-04-2025

Keywords:
सुशीला टाकभैरे, आत्मकथा, मानसिकता, अंधविश्वास

ABSTRACT

सुशीला टाकभौरे आधुनिक युग की दलित साहित्यकारों में से एक प्रसिद्ध साहित्यकार है | इनकी रचना 'शिकंजे का दर्द' एक ऐसी आत्मकथा है जिसके द्वारा दलित आत्मकथा की रूपरेखा, उनके रहन-सहन का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है | इनकी इस रचना ने समाज में दलित साहित्य के प्रति हलचल पैदा कर दी थी | इस विख्यात रचना के द्वारा इन्हें काफ़ी प्रसिद्धी मिली | इन्होंने दलित साहित्य में न केवल आत्मकथा लिखी बल्कि कहानी और कविता के क्षेत्र में भी लेखन किया है | इनकी कविताओं में विद्रोहिणी , तुमने उसे कब पहचाना , ओ बाल्मीकि इत्यादी संकलित है | इनकी सुप्रसिद्ध कहानियाँ – अनुभूतियों के घेरे , टूटता वहम ,संघर्ष और जरा समझो जैसी उत्कृष्ट कृतियाँ भी शामिल है | उपन्यास के क्षेत्र में भी इनकी सुप्रसिद्ध रचनाएँ है – तुम्हें बदलना ही होगा , नीला आकाश , वह लड़की उत्कृष्ट कोटि की रचनाएं है | नंगा सत्य इनकी प्रसिद्ध नाटय कृति में से एक है | सुशीला जी का व्यक्तित्व एक बहुआयामी व्यक्तित्व है| सुशीला जी दलित महिलाओं के यथार्थ को प्रत्यक्ष रूप से जनता के सामने लाना चाहती है | इनके हृदय में दलित समाज की महिलाओं के प्रति एक अद्भुत जिज्ञासा और तड़प है जिज्ञासा इसलिए थी की दलित महिलाओं को इतना प्रताड़ित किया जा रहा था की उन्हें समझ में ही नहीं आता की, इस तरह की व्यवहारिकता भला कोई इन्सान कैसे कर सकता है ? लोगों की मानसिकता को देख वे तड़प उठती है ,किसी के प्रति ऐसी घृणा भला कैसे हो सकती है ? क्या मानव को मानव की आवश्यकता नहीं ? वह केवल भेद -भाव , छल – कपट , राग -द्वेष इन सभी विकारों के लिए ही बना है | दलित समाज के प्रति सवर्ण जाति के लोगों की मानसिकता इतनी गिरी हुई है जो मानवीय व्यवहार के विरुद्ध है | दलित महिला के जीवन में केवल घुटन , व्यथा , प्रताड़ना और असामाजिक किस्म के घटिया मनोविकार उद्वेलित थे | हमारे समाज में चाहे स्त्रियाँ जिस भी क्षेत्र में हो उन्हें उनके द्वारा

जीने की छुट नहीं है खासकर अगर वह महिला दलित समाज की हो तो उसका शोषण घर से ही शुरू हो जाता था , बाहरी दुनिया की तो दूर की बात है |

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15223325

प्रस्तावना - सुशीला टाकभैरे जी के दलित साहित्य से जनता बहुत प्रभावित है ,उनकी दलित लोगों को लेकर जो आभिव्यक्ति थी वह एक उन्नत समाज के लिए बहुत प्रेरणादायक और आनेवाली पीढ़ी के लिए बहुत आवश्यक है | दलित साहित्य में सुशीला जी ने अपनी अहमियत को लोगों के सामने प्रस्तुत किया| दलित महिला के रूप में सुशीला जी ने जो भोगा था उसकी व्यथा उनके आतंरिक हृदय में कचोटती है ,अब किसी और के साथ ऐसा जुल्म हो ,ऐसा वह नहीं चाहती इसी के फलस्वरूप उन्होंने दलितों के लिए हर उस विरोध का सामना किया जो असहनीय था |

इनकी सुप्रसिद्ध कविता 'विद्रोहिणी ' में इन्होने स्त्रियों की पीड़ा को व्यक्त किया है –

''दिल की आग से

आत्मा चटकती है

भावावेश का धुवाँ

कंठ द्वार को चीरकर

उजली सफेदी पर फैला जाता है ' '[1]

इन पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट हो रहा की प्रताड़ित दलित स्त्रियों का हृदय शोषण से कुंठित हो चूका है और अब वे विद्रोह करना चाहती है |

अभावग्रस्त परिस्थिति में अपने आप को हर क्षेत्र में परिपूर्ण करना यह कोई आम बात नहीं, परन्तु सुशीला जी ने यह सिद्ध कर दिया की '**अभाव ही आवश्यकता की जननी होती है** |' सदियों से दलित जीवन की व्यथा चीख – चीख कर अपनी वेदना को बताने का प्रयास कर रही है |' शिकंजे का दर्द' का मूल उद्देश्य है दलित महिलाओं के घुटन और उनकी आप बीती को बताना | समाज की कलुषित परम्पराओं को दलित औरतें अब और बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी और धीरे -धीरे उनमें आक्रोश की भावनाएं पैदा होने लगी थी इसका जीता -जागता उदाहरण सुशीला जी की लेखनी में हमें देखने को मिलता है |

सदियों से मूक स्त्रियाँ अब बोलना चाहती थी और अपने अधिकारों की मांग करने लगी थी | अपनी व्यथा को महसूस करते हुए अपनी चेतना को जगाती है और अपने मत को लोगों के सामने रखती है | सुशीला जी के शब्दों में – **गुरु जी मेरी प्रशंशा करते हुए कहते थे -"सुशीला के कारण हमारे स्कूल का नाम ऊँचा होता है |सिवानी मालवा तहसील के सभी स्कूल से हम जीतकर आते है |"** [2] इन बातों से यह स्पष्ट होता है की शिक्षा किसी की मोहताज नहीं होती न जाति की , न धर्म की | आपकी योग्यता ही आपकी पहचान होती है |

सुशीला जी की दलितों के प्रति जो अभिव्यक्ति है वों इतनी भावुक है की कोई भी पढ़े तो वह उनमें समाहित हो जाए |इन्होंने अपनी लेखनी में महिलाओं की व्यथा को बहुत सुन्दर तरीके से समीचीन किया है | भेद -भाव , मान -अपमान सभी विकारों का इन्होंने अपनी लेखनी में विस्तृत रूप उल्लेख किया है | उनका उनके ही द्वारा प्रश्नों का पूछे जाना यथार्थ को आगे आने की अनुमति देता है | सुशीला टाकभौरे कहती है की जो दलित समाज के लोग होते है वे अपने मन को समझाने के लिए अंधविश्वास का सहारा लेना चाहते है ताकि कहीं न कहीं उनके मन को शांति मिल जाये|अपने आप को मजबूत बनाकर परिस्थितियों से लड़ना ही व्यक्ति की असली पहचान होती है |

इन्होंने अपनी सभी रचनाओं में नारी के उत्थान की बात की है | नारी का अपने जीवन में , अपने अस्तित्व के प्रति जागृत होना अति आवश्यक है| आखिरकार वह कब तक चुप रहेगी ?और कब तक अपने अधिकारों को खोती रहेगी ?इस पुरुषवादी समाज में नारी के लिए केवल प्रताड़ना और उन्हें उपेक्षित करने की भावनाएं है | सुप्रसिद्ध 'अनीता भारती' हिंदी जगत की विख्यातित कवयित्री है उन्होंने अपने शब्दों में कहा है –

''दौड़ जाऊं इठलाकर

बादलों पर

सारी दुनिया भरी है

मन की कलियाँ

सतरंगी सपने बुन रही है

सूरज की चमक आँखों में

भर रही है ''[3]

प्रस्तुत पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है की उस समय की महिला अपने अस्तित्व को पाना चाहती है वह समझ गई थी की उनकी पहचान अब खो रही है| उनका जीवन बस घर की चार दीवार में ही रह जाएगा | दलित नारी अब शिक्षा को अपनी पहचान बनाना चाहती है| शिक्षा के द्वारा ही वह खुद को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर हो चुकी है | दलित स्त्रियों के स्वर में अब चेतना की भावना है वह चेतना के द्वारा समाज की हर रुढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ कर अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहती है|

सुशीला टाकभौरे अपने जीवन की अनेक पहलुओं से आजीवन इतना रूबरू हो गई है मानो जीवन के अंतिम समय तक वे उन कुप्रभाओं को भूल नहीं पाएंगी| उनके मन की स्थिति इतनी व्याकुल हो गई है की वे उन वेदनाओं को भूल कर भी नहीं भूल पाती | इनकी आत्मकथा में इनके जीवन के बहुत कड़वे अनुभवों का विवरण है इस विवरण से यह स्पष्ट है की दलित महिलाओं का जीवन आखिरकार कितना कष्टदायक होता है ? साहित्य के हर क्षेत्र में वे दलित समुदाय के लिए मार्ग प्रशस्त कर रही है |अपनी रचनाओं के माध्यम से ये एक समतामूलक समाज का गठन कर रही है|

प्राचीन समय से ही औरतों को उनके हाशिये पर रखा गया है | भारत में औरतों को देवी का रूप माना जाता है, फिर भी जाति के नाम पर, स्त्री होने के नाम पर उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है | आज के आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण पर विभिन्न प्रकार के विचार उत्पन्न हो रहे है | आज का समाज एक सशक्त महिला का समाज है फिर भी हर क्षेत्र में आज भी नारी को अपमान का सामना करना पड़ रहा है |भारत में महिलाओं का जीवन कभी सम्मानजनक नहीं रहा तो कभी अपमानजनक रहा | महिलाओं का जीवन काफ़ी असंतुलित रहा है | प्राचीनकाल में इनके सम्मान के लिए न जाने कितने ही लड़ाईयां लडी गयी | इनके अपमान को, | नारी के सम्मान हेतु ही महाभारत जैसे युद्ध हो गए पर आज का समाज जिसे हम आधुनिकता का नाम दे रहे है ,इस आधुनिक समाज में अगर हमारे रक्षक ही हमारे भक्षक हो जाय तो भला क्या किया जाय ? नारी के इन सभी पहलुओं को सुशीला जी ने अपनी लेखनी में उधृत किया है | वह भी समाज को यही सन्देश देना चाहती है की महिलायें भी किसी से कम नहीं है इन्हें भी समाज में समानता की आवश्यकता है |

महिलाओं चाहे वह कितनी भी शिक्षित हो परन्तु उसको केवल शोषण की ही वस्तु समझी जाती है | इनका जीवन केवल घर सम्भालने और उनका बच्चे पैदा करने के लिए ही हुआ है | दलित साहित्य ने अपने नकारे हुए पक्ष को सामने रखा है ,यह साहित्य स्वयं ही अपनी अमानवीय व्यवस्था को समाज के सामने रखते हुए अपने अस्तित्व की रक्षा चाहता है | यह साहित्य किसी भी जाति , समुदाय और धर्म के खिलाफ नहीं है यह केवल अपनी व्यवस्था को ठीक करना चाहता है | सुशीला जी ने स्त्रियों को बलिदान की प्रतिमूर्ति माना है उनका मानना है की त्याग क्या सिर्फ औरते ही करेंगी ?

लेखिका चाहती है की दलित समाज को , स्त्रियों को , जाति , भेद -भाव को समान रूप से अधिकार मिलें | दलित साहित्य का मूल उद्देश्य अपने समाज , अपने अस्तित्व की मांग करता है | सुशीला टाकभौरे की कहानी संग्रह में – **टूटता वहम ,अनुभूति के घेरे ,संघर्ष ,जरा समझो नामक प्रसिद्ध कहानियाँ है** | जिसके द्वारा इन्होने दलित जीवन की व्यथा को बताया है |

सुशीला जी को न केवल दलित महिलाओं के लिए व्यथा है उन्हें हर उस महिला के लिए व्यथा है जो समाज से प्रताड़ित की हुई है | ऐसा इसलिए क्यों की वे स्त्री के हृदय की घुटन को समझती है उनके इस व्यथा को समझने का कारण यह है की वे जीवन की हर उस दर्द को महसूस कर चुकी है जो असहनीय है | इन्होंने अपने जीवन की अभिव्यक्ति बहुत ही गहराई तक की है | एक स्त्री को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए बहुत से संघर्षों का सामना करना पड़ता है जिसकी अनुभूति सुशीला जी को बचपन से ही है |इनकी कहानी संग्रहों का मूल उदेश्य केवल साहित्य समाज से जुड़ना ही नहीं रह गया है बल्कि समाज में ,लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना भी है |इस बदलाव में घटित , विघटित सभी पहलुओं को लाना भी है |

सुशीला जी डॉ. बाबा साहेब से प्रेरित होकर कहती है की – ‘‘**इनके संघर्ष को सही दिशा मिलने पर ही ये प्रगति और परिवर्तन के सही मार्ग पर आगे बढ़े है | इनकी सफलता के पीछे बाबा साहेब आंबेडकर की विचारधारा कहीं प्रत्यक्ष , कहीं परोक्ष रूप में कार्यरत है ,जिसका आधार शिक्षा ,संघर्ष और संघटन है , जो शोषित ,पीड़ित समाज के लिए जाग्रति का संदेश है | यह नारी चेतना के लिए भी जागृति , मुक्ति और सबलता का सन्देश है|**’’[4]

इन सभी अभिव्यक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है की उनका जीवन कितना संघर्षमय और कितना प्रेरणादायक रहा है | इनके प्रेरणा का मूल यह है की इन्होंने अपने जीवन की हर उस सत्यता को बड़ी ही सुदृढ़ता और चुनौतियों के साथ अपनाया है | सुशीला जी की कहानियों की गहराई इस बात का प्रमाण देती है की नारी अबला नहीं है ,वह एक सबला स्त्री है |वह अपनी प्रगति के लिए जीवन के किसी भी चुनौतियों का सामना कर सकती है | नारी को अपने नारीत्त्व के साथ -साथ अपने अस्तित्व की भी चिंता है इसलिए वह सारे बन्धनों को तोड़ कर अपने स्वाभिमान की रक्षा करती है |जिस तरह हर प्राणी एक समाज का हिस्सा है ठीक उसी तरह नारी भी हमारे समाज का एक अहम हिस्सा है | यह सब कुछ जानते हुए भी वह खुद को एक कैदी की तरह बंद कर चार दिवारी में रखती है | नारी जीवन की कहानियों में निम्नस्तर की ऐसी – ऐसी घटनाएँ है जिनका वर्णन करना असंभव है फिर भी सुशीला जी ने अपनी लेखनी में पाठको को बाँध लिया है | इन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से आम जनता के जीवन को प्रेरणादायक बना दिया है |

सुशीला टाकभौरे अपनी कविता साहस में अपनी चेतना को जगाते हुए कहती है की –

''चेतना है हमारे बीच

सदियों से पर

साहस का अभाव है |''[5]

इनकी लेखनी में आत्मविश्वास जगाने का अद्वितीय प्रयास है | अपनी लेखनी को सर्वोच्च कोटी की लेखनी बनाने में इन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी है | स्त्रियों को उनके हक के लिए जो मार्ग दिखाया वह अपने आप में अविस्मरणीय है | हमारे पुरुषवादी समाज को यह समझने में काफ़ी समय लग गया की घर को केवल औरत की ही नहीं बल्कि पुरुष को भी आवश्यकता है , दोनों के जुड़ने से ही घर होगा , जुड़ने का अर्थ केवल यह नहीं की शारीरिक तौर पर , बल्कि मानसिक तौर पर भी और कर्तव्यों के भी मामले में **भी | हमारी विख्यात लेखिका महादेवी वर्मा कहती है की – '' वह पुरुष के समान ही अपने जीवन को व्यवस्थापित तथा कार्यक्षेत्र को निर्धारित कर सकती है तथा उसका मातृत्व या पत्नी व् उसे अपना विशिष्ट मार्ग खोजने से नहीं रोक सकता और न उसके जीवन को घर की संकीर्ण सीमा तक ही रख सकता है |''**[6]

जब स्त्रियाँ अपने नारीत्त्व को पहचानने लगी तब उन्हें बाँध पाना असम्भव सा हो गया , पुरुषों के लिए भी और इस रुढ़िवादी समाज के लिए भी | अब वे अपने जीवन को एक उत्कृष्ट कोटी तक पहुँचाना चाहती है| सुशीला जी बचपन से ही कभी जाति के नाम पर , कभी स्त्री होने के नाम पर हर समय उन्हें अवहेलना ही मिली है | जिसका वर्णन उन्होंने अपनी आत्मकथा शिकंजे का दर्द में किया है – उनकी ही कक्षा में उनके गुरु जी कहते है –'' **सुशीला तुम आगे क्यों बैठी हो ?तुम्हें तो सबसे पीछे बैठना चाहिए | फिर उन्होंने पूरी कक्षा को डांट कर कहा था – जिसको जिस जगह पर बैठने को कहा गया था वह अपनी जगह पर बैठेगा |कोई भी अपनी जगह नहीं बदलेगा | ''**[7]

निष्कर्ष – इस प्रकार हम पाते है की सुशीला जी ने अपनी लेखनी को सार्थक बनाने के लिए हर अथक प्रयास किया और वह इस प्रयास में सफल भी हुई | उनकी दलित साहित्य की लेखनी अपने आप में एक सार्थक लेखनी है चाहे वह कविता हो ,

कहानी हो, लेख को या फिर आत्मकथा हो हर क्षेत्र में ही इन्होंने पाठको के दिल को जीत लिया है | पाठक जब इनके साहित्य को पड़ते है तो वे अपने आप को उसमें महसूस करते है यही एक लेखक की सार्थकता होती है | सुशीला जी के साहित्य में एक अद्भुत चमत्कार है जिसे वे अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा जनता तक पहुंचाती है |एक स्त्री जब अपने अस्तित्व के लिए लडती है तो वह किसी की भी परवाह नहीं करती | स्त्री का अपने जीवन में उत्तार -चढ़ाव आजीवन लगा ही रहता है | इन सब के बावजूद वह खुद को इतना सबल बना लेती है जो की अविश्वनीय है | साहित्य के द्वारा लेखिकाओं ने जो खुद को सबल और सुदृढ़ बनाया वह हमारी आनेवाली पीढ़ी में दिख रही है | हमारा समाज इस नए दौर में अब नारी को अपना चूका है | अब पुरुष भी स्त्रियों के कष्ट को , उनकी वेदना को , उनके मान – अपमान को अपना समझ रहा है , इसका पूरा श्रेय हमारे लेखक और लेखिकाओं को जाता है |

दलित साहित्य ने जिस तरह अपनी वेदना को जनता के सामने खोलकर रख दिया है मानो पाठक के पात्र वे खुद हो या उनके किसी अपने पर बीती हुई दास्ताँ हो | नारी के जीवन की हर घटना को चाहे वह सम घटना हो या विषम घटना हो उन्होंने अपने जीवन में महसूस किया और अपनी कलम की ताकत को जनता के सामने प्रस्तुत किया | सुशीला जी हमारे लिए एक मार्ग दर्शक के रूप में है जिसे हम आजीवन अपने आप में महसूस करेंगें | हर नारी के लिए सुशीला जी एक प्रेरणा का स्वरूप रहेंगी |

सन्दर्भ –

1.https://www.hindwi.org/kavita/widrohini-sushila-takbhaure-kavita, समय – 10:33 ,1.4. 25

2 . टाकभौरे सुशीला , शिकंजे का दर्द ,वाणी प्रकाशन (संस्करण -2014), पृष्ट संख्या – 76

3 . एक कदम मेरा भी (2013) , अनीता भारती , पृष्ट संख्या -152

4 . टाकभौरे सुशीला ,संघर्ष , मनोगत : संघर्ष के लिए (प्रथम संस्करण)

5 .टाकभौरे सुशीला , कोलार जल रहा है – (कविता – स्तम्भ), पृष्ट संख्या -21

6 .वर्मा महादेवी , श्रृंखला की कड़िया , तृतीय संस्करण , लोकभारती -2001 , पृष्ट संख्या -56

7 .टाकभौरे सुशीला , शिकंजे का दर्द , वाणी प्रकाशन – संस्करण – 2014,पृष्ट संख्या -22